**30/07/2020**

# Social Psychology

Paper V

B.A. III (Hons.)

# Causes of Social Tension

# सामाजिक तनाव के कारण

**(… continued)**

2. **व्यक्तित्व कारक (Personality Factors) –**
सामाजिक तनाव या सामूहिक तनाव का एक आधार व्यक्तित्व संरचना (personality structure) तथा व्यक्तित्व संगठन (personality organisation) है। कुछ लोगों के व्यक्तित्व की संरचना या संगठन कुछ ऐसा होता है कि सामाजिक तनाव उत्पन्न करने में उन्हें आनंद मिलता है। प्रत्येक समूह या समाज में कुछ ऐसे लोग होते हैं जो रोगात्मक वैरभाव (pathological hostility) से पीड़ित होते हैं। ऐसे लोग दूसरों पर आक्रमण कर के अपने वैरभाव की संतुष्टि करते हैं। **Campbell** 1947 ने अपने अध्ययन में देखा की जो अमेरिकन अपने आर्थिक संकट (economic crisis) के कारण वैरभाव से पीड़ित थे, उनहोंने यहूदियों के प्रति अधिक आक्रमणकारी व्यवहार दिखलाया। भारतीय परिवेश में कुछ हिन्दू या मुसलमान इसी रोगात्मक वैरभाव से पीड़ित हो कर सांप्रदायिक तनाव फैलाते हैं। इसी प्रकार जातिगत तनाव को उत्पन्न करने में रोगात्मक व्यक्तित्व (pathological personality) का हाँथ होता है।

3. **सामाजिक कारक (Social Factors) –**
सामाजिक तनाव का अगला प्रमुख कारण कुछ ऐसे सामाजिक कारक हैं जिनका सम्बन्ध सामाजिक मूल्य (social values), सामाजिक मानक (social norms) तथा विश्वास (belief) आदि से होता है। मूल्यों, मानकों, विश्वासों एवं पूर्वाग्रहों में विभिन्नता के कारण एक समुदाय या समाज के लोगों के बारे में दूसरे समुदाय या समाज के लोगों में कुछ गलतफहमियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जिनसे सामाजिक तनाव बढ़ता है। उच्च वर्ग तथा निम्न वर्ग के बीच सामाजिक तनाव रहने का यह एक प्रमुख कारण है। उसी तरह से हिन्दू अपने समाज के मानकों, मूल्यों एवं विश्वासों को मुसलमान समाज के मानकों, मूल्यों, विश्वासों एवं पूर्वाग्रहों से अधिक श्रेष्ट समझते हैं और उसी तरह से फिर मुसलमान समाज के लोग अपने समाज के मानकों, मूल्यों, विश्वासों एवं पूर्वाग्रहों को अधिक श्रेष्ट समझते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि दोनों समुदाय के लोगों को

एक दूसरे के प्रति कुछ गलतफहमियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जो धीरे-धीरे सामाजिक तनाव का रूप ले लेती है।

## 4. आर्थिक कारक (Economic Factors) –

सामाजिक तनाव एवं वर्ग तनाव को उत्पन्न करने में आर्थिक कारकों का बहुत बड़ा हाँथ होता है। यदि गंभीरता से विचार किया जाये तो पता चलेगा की आर्थिक विषमता (economic disparity), आर्थिक संकट (economic crisis), आर्थिक पिछड़ापन (economic backwardness), आर्थिक फुलाओ (economic inflation), आदि सामाजिक तनाव के मुख्य कारण हैं। जिस समाज में मुट्ठी भर लोगों के पास धन-दौलत का ढेर हो और अधिकाँश लोग भुखमरी, बीमारी, बेरोजगारी तथा गरीबी से पीड़ित हो, उस समाज में संघर्ष एवं तनाव का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। भारत में निम्न जाति तथा उच्च जाति के हिन्दुओं के बीच सामूहिक संघर्ष का एक प्रधान कारण यही आर्थिक विषमता है। इसी तरह आर्थिक पिछड़ापन के कारण जब किसी समूह के लोग अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि नहीं कर पाते हैं तो वे निराशा (frustration) का शिकार बन जाते हैं और दूसरों पर आक्रमणकारी (aggressive) तथा हिंसक (violent) व्यवहार करने लगते हैं। अमीरों के प्रति गरीबों के हिंसक व्यवहारों के पीछे यह एक मौलिक तत्त्व है। कुछ आर्थिक कारणों से कई बार सामाजिक आंदोलन हुए। अमेरिका में नीग्रो द्वारा सामाजिक आंदोलन चलाया गया, जिसका आधार आर्थिक संकट था। Karl Marx ने आर्थिक पृष्टभूमि में ही साम्यवादी आंदोलन (communist movement) चलाया जो रूस के बाद भारत में भी सक्रिय है।

## 5. धार्मिक कारक (Religious Factors) –

भारत जैसे देश में सामाजिक तनाव बहुत हद तक धार्मिक अंधविश्वासों के कारण होता है। यहां भिन्न-भिन्न धर्म के लोग रहते हैं। प्रायः यह देखा गया है कि लोग अपने धर्म एवं मजहब को श्रेष्ट मानते हैं तथा दूसरों के धर्म एवं मजहब को हीनता के भाव से देखते हैं। इस अंधविश्वास के कारण प्रायः सांप्रदायिक दंगे होते हैं। हिन्दू एवं मुस्लमान के बीच प्रायः जो सांप्रदायिक दंगे होते रहते हैं, उनका एक प्रमुख कारण कुछ धार्मिक अंधविश्वास हैं। इन विरोधी तथा कथित धार्मिक विश्वासों के कारण दोनों सम्प्रदायों के बीच hostility उत्पन्न होती है, जो सांप्रदायिक तनाव तथा दंगा का कारण बनता है।

**(…to be continued)**

**Dr. Hena Hussain**

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com